सबकुछ
जिसकी
आपको जरूरत है
सही समय पर आपके
पास आ जाएगा।
– अज्ञात

विवाद का दौरा

बेहतर होगा कि भारतीय सांसदों और राजनेताओं को बेरोकटोक घाटी जाने और वहां अपनी मर्जी से हर किसी से मिलने का अवसर मिले। वहां सामान्य स्थिति जल्द से जल्द बहाल की जाए ताकि वहां के लोगों का भरोसा लौटे।

रोहित सिंह

यूरोपीय संसद के अनौपचारिक प्रतिनिधिमंडल के जम्मू–कश्मीर दौरे से केंद्र सरकार को यह उम्मीद है कि घाटी को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थिति साफ होगी और कुछ देशों द्वारा चलाया जा रहा दुष्प्रचार अपनी मौत मर जाएगा। लेकिन अभी तो देश में ही इस पर काफी विवाद हो गया है। एक तरफ विपक्ष ने इस पर सवाल उठाए हैं, दूसरी तरफ कुछ विश्लेषकों ने कहा है कि वैश्विक स्तर पर भी इससे भारत को कोई खास फायदा नहीं होगा। अपोजिशन का कहना है कि जब भारतीय सांसदों को घाटी में घुसने की इजाजत नहीं दी जा रही है, तो विदेशी सांसदों को वहां भेजने का क्या तुक है?

अगर सरकार मानती है कि वहां हालात सुधर गए हैं तो सबसे पहले देश की संसद के प्रतिनिधियों को हालात का जायजा लेने देना चाहिए था। जम्मू–कश्मीर के वर्तमान हालात को लेकर उनकी राय देश की जनता को आश्वस्त करती और दुनिया में भी इसका सकारात्मक संदेश जाता। एक परिपक्व लोकतंत्र में अपने जन प्रतिनिधियों की उपेक्षा कर विदेशी प्रतिनिधियों को तवज्जो देना भारत की संप्रभुता को संदिग्ध बनाता है। अपोजिशन के साथ–साथ देश के कई अन्य राजनेताओं–विश्लेषकों ने इसके दूसरे पहलू की ओर ध्यान खींचा है। उन्होंने इस प्रतिनिधिमंडल के स्वरूप पर सवाल उठाया है।

यह यूरोपीय संघ का आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल नहीं है। इसमें शामिल ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और पोलैंड के एमपी अपनी निजी हैसियत से आए हैं और इनमें से ज्यादातर काफी विवादास्पद रहे हैं। उनकी छवि न अपने मुल्क में अच्छी है, न ही यूरोपीय संसद में। इन लोगों ने अगर जम्मू–कश्मीर को लेकर कुछ अच्छी बातें कहीं तो भी दुनिया इन पर भरोसा नहीं करेगी। खुद बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने इन सांसदों को कश्मीर भेजने पर सवाल उठाते हुए कहा कि 'मुझे आश्चर्य है, विदेश मंत्रालय ने यूरोपीय संघ से जुड़े नेताओं के जम्मू–कश्मीर में दौरे की व्यवस्था उनकी निजी हैसियत में की है। यह हमारी राष्ट्रीय नीति के खिलाफ है।' बहरहाल, इन्हें आमंत्रित करने के पीछे सरकार की मंशा बिल्कुल ठीक हो तब भी इस कवायद से कश्मीर पर बना भ्रम शायद ही साफ हो पाएगा।

यह सही है कि पाकिस्तान, मलयेशिया और तुर्की जैसे देश इस मामले में हमें घेर रहे हैं पर उन्हें जवाब तभी दिया जा सकेगा जब घाटी को लेकर हमारा रवैया कुछ छुपाने जैसा न नजर आए। जब हम विदेशियों को वहां जाने दे रहे हैं तो अपने लोगों को भला रोक क्यों रहे हैं? बेहतर होगा कि भारतीय सांसदों और राजनेताओं को बेरोकटोक घाटी जाने और वहां अपनी मर्जी से हर किसी से मिलने का अवसर मिले। वहां सामान्य स्थिति जल्द से जल्द बहाल की जाए ताकि वहां के लोगों का भरोसा लौटे। 370 हटाने का फैसला अगर विकास के लिए किया गया है तो विकास होता हुआ दिखे।

दो दृष्टिकोण

धर्म-दर्शन

लामा दोबूम टुल्कू।

बौद्ध धर्म ग्रंथों के अनुसार आत्मज्ञान को पाने के दो दृष्टिकोण हैं। एक भक्ति का मार्ग है तो दूसरा तर्क का। इन दोनों में से भक्ति या श्रद्धा मार्ग ज्यादा व्यावहारिक होता है। किसी वस्तु या कारण के प्रति न टूटने वाला सकारात्मक ध्यान ही भक्ति कहलाता है। भक्ति को भी उसकी विशेषताओं के आधार पर तीन प्रकार में बांटा गया है। पहला शांति के साथ भक्ति। दूसरा विश्वास के साथ भक्ति और तीसरा प्रेरणा के साथ भक्ति।

शरीर, वाणी और मन के साथ हम मानसिक अवस्था को समझने की कोशिश करते हैं। उनका शरीर पूर्णरूप से शांति से भरा है। सच बोलने वाली वाणी सुखदायक ध्वनि का संचार करती है और उनका मन करुणा से भरा हुआ है। बुद्ध के बारे में इस तरह की सोच भक्ति और शांति प्रदान करती है। वाणी की ओर विश्वास के साथ ध्यान देना भक्ति है और बुद्ध की ओर प्रेरणा के साथ ध्यान देना भक्ति है।

संपादकीय

बदल सकता है माहौल

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जितनी घोषणाएं कीं, उसे मिनी बजट कहना कोई ज्यादती नहीं है। अर्थव्यवस्था की मौजूदा स्थिति को देखते हुए यह अस्वाभाविक भी नहीं है। सबसे अच्छी बात यह रही कि उन्होंने स्थिति की गंभीरता को स्वीकार किया और किसी भी समस्या से कतराने की कोशिश नहीं की। उनका जोर इस पर था कि समस्याओं को हल कैसे किया जाए। उद्योग जगत में बजट के बाद से ही जो निराशा का माहौल दिख रहा है, उसे पलटने के लिए उन्होंने बजट के कई फैसलों में बदलाव किया। विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) पर लगा सरचार्ज वापस ले लिया गया। कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) के उल्लंघन पर जेल की सजा खत्म कर दी गई और मामले को सिविल शक्ल देकर जुर्माने तक सिमटा दिया गया। निवेश पर होने वाले फायदे (कैपिटल गेन्स) पर बढ़ा हुआ सरचार्ज वापस ले लिया गया। इसके अलावा छोटे और मझोले उद्योगों के पेंडिग पड़े जीएसटी रिफंड का भुगतान 30 दिन में करने की बात कही गई, साथ ही यह भी कि आगे सारे जीएसटी रिफंड का भुगतान 60 दिन के अंदर कर दिया जाएगा। इन घोषणाओं से वित्त मंत्री ने निवेशकों और कारोबारियों में सरकार के हालिया कदमों से उपजी नाराजगी को दूर करने की कोशिश की। कारोबारी ठहराव तोड़ने के लिए वित्त मंत्री ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पूंजी मद में 70,000 करोड़ रुपये डालने का ऐलान किया। उम्मीद है कि इससे बाजार में पैसे आएंगे और खरीदारी बढ़ेगी। ऑटो सेक्टर की सुस्ती खत्म करने के लिए उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार सरकारी विभागों द्वारा नई गाड़ियों की खरीद पर लगी रोक हटा लेगी।

वित्त मंत्री की ये घोषणाएं बताती हैं कि पिछले एक–दो महीनों में सरकार आत्ममंथन के दौर से गुजरी है, जो निश्चित रूप से एक सकारात्मक संकेत है।

दरअसल सिंधु ने अपनी पुरानी कमियों को ध्यान में रखकर और उनसे उबरकर फाइनल खेला। इस साल उन्हें कोई खिताबी जीत नही मिली थी, लिहाजा उनसे उम्मीद कम थी और उन पर दबाव भी कम था।

सिंधु की स्वर्णिम जीत

पुर्णिमा

पी.वी. सिंधु ने स्विट्जरलैंड में बीडब्ल्यूएफ बैडमिंटन वर्ल्ड चौंपियनशिप 2019 के फाइनल में जापान की नाओमी ओकुहारा को सीधे सेटों में हराकर इतिहास रच दिया है। इस क्रम में वह वर्ल्ड चौंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बन गई हैं। इससे पहले इस प्रतियोगिता में भारत के लिए महिला, पुरुष या डबल्स, किसी भी वर्ग में कोई भी गोल्ड मेडल नहीं जीत पाया था। सिंधु ने साबित किया कि असाधारण संकल्प शक्ति से कई बार हारने के बाद भी शिखर पर पहुंचा जा सकता है। पिछले कुछ समय से हर बड़ी प्रतियोगिता में फाइनल तक पहुंचने के बावजूद निर्णायक जीत उनके हाथ से फिसल जा रही थी।

ओलिंपिक, वर्ल्ड चौंपियनशिप, एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ गेम्स, इन सभी में सिंधु फाइनल तक तो पहुंच रही थीं लेकिन महिला एकल में गोल्ड अक्सर उनकी पहुंच से बाहर रह जा रहा था। रियो ओलिंपिक के बाद से अब तक सिंधु ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में कुल 16 फाइनल में एंट्री की लेकिन इनमें से वह 5 खिताब ही अपने नाम कर पाईं। हालत यह हुई कि उन्हें फाइनल का चोकर कहा जाने लगा। लेकिन वर्ल्ड चौंपियन का तमगा अपने नाम करके उन्होंने आलोचकों

का मुंह बंद कर दिया। जीत के बाद उन्होंने कहा कि पिछले दो विश्व चौंपियनशिप फाइनल में खिताब न जीतने के कारण हो रही आलोचना से वह नाराज और दुखी थीं, लेकिन अब अपने रैकेट से उन्होंने जवाब दे दिया है।

फाइनल में सिंधु ने जापान की ओकुहारा को 21–7,21–7 से मात दी और उनके हाथों दो साल पहले फाइनल में मिली हार का हिसाब चुकता कर लिया। दरअसल सिंधु ने अपनी पुरानी कमियों को ध्यान में रखकर और उनसे उबरकर फाइनल खेला। इस साल उन्हें कोई खिताबी जीत नही मिली थी, लिहाजा उनसे उम्मीद कम थी और उन पर दबाव भी कम था। ऐसे में जब दूसरी वरीयता प्राप्त ताई जू यिंग को हराने के बाद उनका आत्मविश्वास बढ़ गया और फाइनल में उन्होंने बहुत तेज गेम खेला। उन्होंने ओकुहारा को लंबी रैली खेलने का मौका ही नहीं दिया। इसके साथ ही अपनी लंबाई का फायदा उठाते हुए बेहद तेज स्मैश लगाकर ओकुहारा को लगातार हैरान–परेशान किए रखा।

इस जीत के बाद सिंधु से उम्मीदें काफी बढ़ गई हैं और अब टोक्यो ओलिंपिक 2020 में उनसे गोल्ड की अपेक्षा जरूर की जाएगी। आज वह देश भर के उन हजारों युवाओं, खासकर लड़कियों की प्रेरणास्रोत बन गई हैं, जो बैडमिंटन में अपना करियर बनाना चाहती हैं। पीवी सिंधु और सायना नेहवाल जैसी खिलाड़ियों की उपलब्धियों ने बैडमिंटन को आम लोगों की भी चर्चा के केंद्र में ला दिया है। निश्चय ही इसमें एक बड़ी भूमिका कोच पुलेला गोपीचंद की है, जिन्होंने अपनी लगन और मेहनत से देश को कई दिग्गज शटलर दिए हैं। उम्मीद करें कि आगे अन्य खेलों में भी ऐसे ही डटकर काम करने वाले निकलेंगे और इस क्षेत्र में भारत की आत्मछवि सुधारने में मददगार बनेंगे।

सूडोकु नवताल-5135

कठिनतम

		4			9			
	2			8	4			
8						3		
							9	4
	3						7	
5	6							
		7						9
			2	5			8	
			6			2		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5134 का हल

5	9	1	2	8	4	3	6	7
6	4	2	3	5	7	9	1	8
8	3	7	9	6	1	4	2	5
4	7	5	8	2	6	1	9	3
3	6	9	7	1	5	8	4	2
1	2	8	4	3	9	7	5	6
7	5	6	1	9	8	2	3	4
9	8	3	5	4	2	6	7	1
2	1	4	6	7	3	5	8	9

अपना ब्लॉग

सोने से महंगा क्यों चल रहा है पैलेडियम

चंद्रभूषण। सोने का बेतरह महंगा होना बीती दीवाली पर एक आम हिंदुस्तानी गृहस्थ के लिए भारी समस्या बना रहा। दुनिया में अभी जिस तरह की वित्तीय आशंकाओं का बाजार गर्म है ,उसे देखते हुए नियमित उतार–चढ़ाव के बावजूद आने वाले समय में सोने की चमक और ज्यादा बढ़ने की संभावना बनी हुई है। लेकिन शायद आपको यह जानकर आश्चर्य हो कि गहने बनाने में काम आने वाली धातुओं में सोना अभी सबसे महंगा नहीं है। पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र में प्लैटिनम उसे कड़ी टक्कर देता रहा है और जब–तब वह सोने से आगे भी निकल जाता रहा है, लेकिन अभी सोने के मुकाबले प्लैटिनम के भाव काफी नीचे हैं। जिस धातु ने पिछले कई महीनों से कीमत के मामले में सोने को पीछे छोड़ रखा है, वह है प्लैटिनम के ही परिवार वाली धातु पैलेडियम, जो ग्राहकों से लेकर आभूषण उद्योग तक की कोई खास पसंद नहीं मानी जाती रही है। इन पंक्तियों के लिखे जाते समय भारतीय सर्राफे में इन तीनों धातुओं के भाव प्रति दस ग्राम इस प्रकार थे– प्लैटिनम 28,810 रुपया, सोना 39,300 रुपया और पैलेडियम 40,849 रुपया।